

## रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 7

### उत्पत्ति 1 का साहित्यिक ढाँचा, मेसोपोटामिया की निर्माण कहानियाँ -

#### एनुमा एलिश

साहित्यिक रूपरेखा परिकल्पना: वनॉय की आपत्तियाँ

कल समय समाप्त होने पर, हम उत्पत्ति 1 के दिनों के संबंध में, जिसे अक्सर रूपरेखा परिकल्पना कहा जाता है, देख रहे थे। इस दृष्टिकोण का विचार यह है कि उत्पत्ति 1 के दिन वास्तविक दिन नहीं हैं, बल्कि वे एक साहित्यिक हैं ईश्वर ने पृथ्वी की रचना कैसे की, इसकी प्रस्तुति का साधन प्रदान करने के लिए अध्याय के लेखक द्वारा उपयोग किया गया उपकरण। अब, मैंने कहा कि मैं आज इस चर्चा को जारी रखना चाहता हूँ, और मैं जो करना चाहता हूँ वह कुछ आपत्तियों का उल्लेख करना है, जो मुझे इस विचार को वैध दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार नहीं करने का कारण प्रतीत होता है, हालांकि जैसा कि मैंने पिछले कक्षा घंटे में उल्लेख किया था, ऐसा प्रतीत होता है कि यह इंजील विद्वानों द्वारा तेजी से वकालत किया जाने वाला दृष्टिकोण है। अब, मैं इस पर आपत्ति के तौर पर बस कुछ बातें बताना चाहूँगा।

सबसे पहले, मुझे नहीं लगता कि उत्पत्ति 1 के पाठ में ऐसा कुछ भी है जो हमें थोड़ा सा संकेत देता है कि दिनों को भगवान की रचनात्मक गतिविधि में वास्तविक अवधियों या अनुक्रमों के वर्णनात्मक के बजाय केवल एक साहित्यिक रूप के रूप में माना जाना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि उस अध्याय में इसका कोई संकेत है; यह कुछ ऐसा है जिसे आपको उस अध्याय में लाना होगा। मुझे ऐसा लगता है कि यदि आप यहां जो ऐतिहासिक विवरण प्रतीत होता है, उसे वास्तव में ऐतिहासिक विवरण नहीं बल्कि केवल एक साहित्यिक रूप मानते हैं, तो बाइबल में कई अन्य आख्यानों के बारे में ऐसा क्यों नहीं कहा जा सकता है जो मौजूद हैं स्वयं को ऐतिहासिक आख्यानों के रूप में? इसके बजाय आप कह सकते हैं कि वे वास्तव में ऐतिहासिक आख्यान नहीं हैं, बल्कि वे किसी प्रकार का साहित्यिक रूप हैं, वास्तव में जो हुआ उसके रिकॉर्ड के अलावा कुछ और। मुझे नहीं लगता कि पाठ में इसका

कोई सबूत है कि यह सिर्फ एक साहित्यिक रूप है। यह स्वयं को ईश्वर की रचनात्मक गतिविधि में समय की वास्तविक अवधि और अनुक्रम के विवरण के रूप में प्रस्तुत करता है। तो यह एक विचार है। मुझे लगता है कि यदि आप किसी साहित्यिक उपकरण की उस तरह की व्याख्या की अनुमति देने का सिद्धांत अपनाते हैं, तो आप इसे कई अन्य स्थानों पर लागू करने का द्वार खोल देते हैं, और बहुत जल्द आपके पास उन चीजों का वास्तविक इतिहास बहुत कम बचता है जो वास्तव में घटित हुई थीं।

दूसरे, मुझे लगता है कि मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यही मुख्य आपत्ति है। निर्गमन 20 में, भगवान की रचनात्मक गतिविधि और फिर उसके विश्राम को वह पैटर्न कहा जाता है जिसका पालन मनुष्य को छह दिनों के काम और एक दिन के आराम में करना होता है। अब आज, यह माना जाता है कि ईश्वर की गतिविधि में वास्तविकता थी क्योंकि उसने छह अवधियों में सृष्टि में काम किया और फिर एक में विश्राम किया। मुझे ऐसा लगता है कि इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर की उस गतिविधि में वास्तविकता है। यदि आप रूपरेखा दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं, तो आप वास्तव में जो कह रहे हैं वह यह है कि मनुष्य छह दिनों के काम और एक दिन के आराम के पैटर्न में भगवान का अनुसरण नहीं कर रहा है, बल्कि मनुष्य केवल मानवीय रूप से तैयार किए गए साहित्यिक रूप के आधार पर खुद को ढाल रहा है। इसे थोड़ा अलग तरीके से कहें तो, इस दृष्टिकोण के अनुसार, छह-एक पैटर्न की उत्पत्ति स्वयं भगवान की रचनात्मक गतिविधि की वास्तविकता नहीं है, बल्कि छह प्लस एक अनुक्रम में भगवान की रचनात्मक गतिविधि का विचार मानवीय रूप से तैयार साहित्यिक में निहित है रूप।

दूसरे शब्दों में, यह जो करता है वह वास्तविकता में भगवान की गतिविधि और मनुष्य की गतिविधि और आराम के लिए पैटर्न प्रदान करने वाले किसी भी आधार को नष्ट कर देता है। आप ईश्वर के प्रति मनुष्य की नकल को आधार बना रहे हैं, इस पर नहीं कि ईश्वर ने वास्तव में क्या किया, बल्कि इस पर आधारित है कि उत्पत्ति 1 में सामग्री की संरचना में एक लेखक ने क्या किया। अब मुझे ऐसा लगता है कि निर्गमन 20 में जो कहा गया है वह यह है कि ईश्वर ने छह कार्य किए दिन और एक विश्राम, और मनुष्य और उसका अनुकरण

परमेश्वर ने जो किया उसके अनुसार अपना जीवन बनाना है। वहां एक सूक्ष्म बदलाव है, जिसके आधार पर मनुष्य छह दिन काम करता है और एक दिन आराम करता है, ईश्वर ने जो किया उससे लेकर अध्याय के लेखक की रचना और उसके लिए उसने जिस साहित्यिक रूप का उपयोग किया, उससे वास्तविकता में बदलाव आया है। अब मेरे लिए यह एक महत्वपूर्ण विचार है, खैर उन्हें लगता है कि इसे सातवें दिन तक चरमोत्कर्ष तक ले जाने के लिए तीन के दो सेटों के इन समानताओं के साथ संरचित किया गया है, इसलिए यह सब्बाथ के विशेष महत्व पर प्रकाश डालता है। उन्हें लगता है कि इसे इस तरह से संरचित किया गया है, जो सब्बाथ के विशेष महत्व की ओर इशारा करता है।

आप दूसरी प्रविष्टि में अपनी ग्रंथ सूची के पृष्ठ सात पर ध्यान दें, डॉ. रॉबर्ट न्यूमैन का एक हालिया लेख है, "क्या उत्पत्ति निर्माण खाते में घटनाएँ कालानुक्रमिक क्रम में दी गई हैं? उनका उत्तर हाँ है, और वह *द जेनेसिस डिबेट* नामक पुस्तक में है। मुझे नहीं पता कि आपने 1986 के बारे में प्रकाशित चीज़ें देखी हैं या नहीं। विरोधी दृष्टिकोण नीचे कई प्रविष्टियाँ हैं। यदि आप आगे कुछ पढ़ना चाहते हैं जो उत्पत्ति 1 के दिनों में अनुक्रम के इस मामले पर चर्चा करता है, तो आप शायद उन लेखों को देखना चाहेंगे।

न्यूमैन का निष्कर्ष यह है कि यह पैटर्न हो सकता है, आपको वह पैटर्न मिल सकता है लेकिन उस पैटर्न की खोज कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आवश्यक रूप से इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह केवल एक साहित्यिक उपकरण है, न कि कुछ ऐसा जो आवश्यक रूप से वास्तविकता को चित्रित करता है। इसलिए वह उत्पत्ति 1 में उस तरह के पैटर्न को खोजने को पूरी तरह से खारिज नहीं करता है, लेकिन वह इसे केवल एक साहित्यिक उपकरण के रूप में समझने पर आपत्ति करता है जो तब दैवीय गतिविधि के वास्तविक अनुक्रम से छुटकारा पाता है। मुझे लगता है कि उनका वहां एक वैध मुद्दा है। हो सकता है कि ईश्वर ने अपनी रचनात्मक गतिविधि में अपने अनुक्रम को इस प्रकार व्यवस्थित किया हो, ताकि यह सातवें दिन में इस समानता के चरमोत्कर्ष को प्रतिबिंबित करे। मैं अभी भी उस सादृश्य के पाठ्यक्रम के बारे में इतना निश्चित नहीं हूँ कि वह इतना मजबूत है, क्योंकि तीसरे दिन और पांचवें दिन, मुझे नहीं पता कि क्या यह कुछ ऐसा है जिसे हम पाठ पर अधिक पढ़ रहे हैं

और क्या यह वैध है वहाँ। लेकिन आप जिस भी तरह से उस पर आएं, यह आवश्यक रूप से शुद्ध साहित्यिक ढांचे की परिकल्पना की ओर नहीं ले जाता है जहां छह-दिवसीय दृष्टिकोण की कोई वास्तविकता नहीं है।

ए. उत्पत्ति 1:1-2:3 में ब्रह्मांड की रचना 7. उत्पत्ति 1 का ज्ञान कैसे प्रदान किया गया था?

आइए संख्या 7 पर चलते हैं। अक्षर ए के अंतर्गत हम उत्पत्ति 1:1 से 2:3 में ब्रह्मांड के निर्माण पर चर्चा कर रहे हैं। 7. है: "उत्पत्ति 1 का ज्ञान कैसे प्रदान किया गया?" प्रश्न यह है कि पृथ्वी का निर्माण उसमें युग के निर्माण के साथ हुआ है। उस के बारे में क्या? यह अक्सर तर्क दिया गया है। मेरी समस्या यह है कि यह बहुत ज़्यादा साबित होता है। यदि आप इस तरह से बहस करने जा रहे हैं, तो आप कैसे जानते हैं कि पृथ्वी और सारी वास्तविकता और इसमें मौजूद हर चीज़ दो सेकंड पहले नहीं बनाई गई थी? हम कह सकते हैं, ठीक है, मैं x वर्षों से रह रहा हूँ, ठीक है, हो सकता है कि आप उन सभी की याद के साथ कुछ मिनट पहले बनाए गए हों और आप वास्तव में पाँच मिनट पहले यहाँ नहीं थे। इस तरह का तर्क आसानी से किसी ऐसी चीज़ में बदल जाता है जो बकवास है क्योंकि ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे आप वास्तव में कुछ भी जान सकें सिवाय इसके कि शायद आप वास्तव में अभी यहाँ हैं।

खैर, इन सभी डेटा का सामान्य प्रक्रियाओं से कोई लेना-देना नहीं है और जीवाश्म रिकॉर्ड वास्तव में हमें यह सोचने के लिए रखा गया है कि इतना लंबा समय रहा है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था क्योंकि भगवान ने यह सब जगह में बनाया था। आप वही तर्क देख रहे हैं जो इतिहासकार ने इस्तेमाल किया था, जिसे मैंने मिस्र की सभ्यता के बारे में व्हाइट की पुस्तक, *द वारफेयर ऑफ साइंस एंड क्रिश्चियनिटी में पढ़ा था, वह सब ईश्वर द्वारा बनाया गया था*। मिस्र के इतिहास का कोई प्रारंभिक काल नहीं था जब एक पूर्ण विकसित सभ्यता के रूप में क्रमिक विकास हुआ हो, बल्कि इसका निर्माण उसी स्थान पर हुआ हो। उस तरह का तर्क लगभग असीमित तरीकों से उस बिंदु तक लागू किया जा सकता है जहां आप वास्तव में कुछ भी नहीं जान सकते हैं और यह सभी वैज्ञानिक जांच को नष्ट कर देता है।

खैर, मुझे लगता है कि इससे पता चलता है, जैसा कि ईसाई धर्म के आलोचकों ने कहा है, कि भगवान ने हमें धोखा देने के लिए ऐसा किया। मैं नहीं जानता कि क्या आपको अनिवार्य रूप से यह निष्कर्ष निकालना होगा, लेकिन इसका मतलब क्या है। यदि वह इतिहास नहीं था जो अस्तित्व में मौजूद इन स्तरों में प्रतिबिंबित होता प्रतीत होता है, तो भगवान ने इसे उस तरह से क्यों किया? मुझे नहीं लगता कि यह कोई मजबूत तर्क है, कि चीजों को उम्र के आभास के साथ बनाया गया था जिसका इस्तेमाल अक्सर किया जाता रहा है। अंततः यह हर चीज़ के बारे में अनिश्चितता की ओर ले जाता है और इसमें ईश्वर की ओर से धोखा निहित होता है।

उत्पत्ति 1 का ज्ञान कैसे प्रदान किया गया है; जनरल तक पहुंचने से पहले 1

आइए इस प्रश्न पर आगे बढ़ें कि उत्पत्ति 1 का ज्ञान कैसे प्रदान किया गया है; उत्पत्ति 1 पर जाने से पहले आइए हम इस पर विचार करें कि पवित्रशास्त्र के लेख आम तौर पर हमारे पास कैसे आए हैं। मुझे लगता है कि धर्मग्रंथ को देखने से हमें पता चलता है कि धर्मग्रंथ के कुछ हिस्सों में लेखक के माध्यम से भगवान द्वारा सीधा संचार होता है, फिर इसे लिखित रूप में रखा जाता है और इसे हमारे लिए संरक्षित किया गया है। कभी-कभी लेखक को एक दर्शन प्राप्त होता है, विशेष रूप से भविष्यवाणियों की पुस्तकों में, आप पढ़ते हैं कि भविष्यवक्ताओं के पास एक दर्शन होता है, जिसे वे रिकॉर्ड करते हैं और फिर हम तक संचारित करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य लेखक वही करते हैं जो हम करते हैं, वे कुछ शोध करते हैं और वे ऐसी सामग्रियां ढूंढते हैं जो उस विषय से संबंधित होती हैं जिसके बारे में वे लिख रहे हैं और वे उस सामग्री का उपयोग उस पुस्तक की रचना में करते हैं जो वे लिखते हैं। ल्यूक, अपने सुसमाचार (लूका 1:1-4) की प्रस्तावना में, इंगित करता है कि ऐतिहासिक शोध वह तरीका है जिससे उसने अपनी बहुत सारी सामग्री लिखी। मुझे लगता है कि 1 और 2 किंग्स के लेखक के लिए भी यही बात स्पष्ट रूप से सच है क्योंकि वह अक्सर उन स्रोतों का उल्लेख करते हैं जिनका उपयोग उन्होंने किंग्स की पुस्तक में सामग्री लिखने के लिए किया था।

सामग्री एकत्र करने या प्राप्त करने की जो भी विधि का उपयोग किया जाता है, मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि यह किस प्रकार की विधि है, बल्कि महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखकों ने जो कुछ भी उत्पादित किया है उसमें त्रुटि से बचाए रखा जाए। जैसे ही परमेश्वर की आत्मा ने उनके कार्य का निरीक्षण किया, उन्होंने जो कुछ लिखा उसमें उन्हें त्रुटि से बचाया गया।

अब, जब आप उत्पत्ति 1 पर आते हैं, तो यह निश्चित रूप से एक दिलचस्प सवाल है कि उस अध्याय में निहित ज्ञान मूसा के पास कैसे आया? इस तरह के प्रश्न पूछना और उनका उत्तर देना बहुत आसान है। यहाँ उत्पत्ति अध्याय 1 में कोई संकेत नहीं है कि वह ज्ञान मूसा के पास कैसे आया। मुझे नहीं लगता कि यह इतना महत्वपूर्ण है। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह ईश्वर की ओर से हमारे लिए एक रहस्योद्घाटन है और यह सच है। यह ईश्वर की ओर से हमारे लिए एक रहस्योद्घाटन है कि दुनिया कैसे बनी और मनुष्य की रचना कैसे हुई, और यह सत्य और विश्वसनीय है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जब दर्ज की गई बातें घटीं तो मूसा वहाँ नहीं था। क्या परमेश्वर ने मूसा से बात करके उसे ये बातें बताईं? यह संभव है कि मूसा ने उन्हें एक दर्शन में प्राप्त किया और उसने जो देखा उसे दर्ज किया, यह संभव है, लेकिन हम ठीक से नहीं जानते कि वह सामग्री मूसा के पास कैसे आई।

अब मैं एक काल्पनिक सुझाव देता हूँ, मुझे लगता है कि आप पहले ही इस पर फाइनगन पढ़ चुके हैं और शायद इसके लिए कुछ हद तक तैयार हैं। लेकिन अगर यह प्रदर्शित किया जा सकता है, कि उत्पत्ति 1 सृष्टि के बेबीलोनियाई विवरण का रूपांतरण था, जिसमें बहुदेववादी तत्वों को हटा दिया गया था, और उस तरह की चीजें बदल गईं, मुझे लगता है कि अगर हम इसे प्रदर्शित कर सकते हैं तो हम कह सकते हैं कि यह काफी संभव है कि ईश्वर ऐसा कर सकता है मूसा को उस प्रकार की परंपरा का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया है। इसके जो हिस्से सत्य थे उन्हें बनाए रखना, बाकी को त्याग देना, और यही परमेश्वर का वचन होगा। अब मुझे नहीं लगता कि इसकी संभावना है और मुझे नहीं लगता कि इसका समर्थन करने के लिए कोई सबूत है। मैं सिर्फ सैद्धांतिक तौर पर बोल रहा हूँ। जो बात मुझे महत्वपूर्ण लगती है वह यह है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के लेखन को प्रेरित

किया है, ताकि परिणाम ईश्वर का लिखित वचन हो। जब हम मौखिक प्रेरणा की बात करते हैं, तो पवित्रशास्त्र का प्रत्येक शब्द भरोसेमंद, विश्वसनीय और सत्य है। अक्सर हमें तरीका पता नहीं होता. विधि महत्वपूर्ण बात नहीं है.

अब इस काल्पनिक चीज़ पर वापस आने के लिए, मान लीजिए कि मूसा के पास सृष्टि के बारे में कुछ परंपराएँ थीं, और पवित्र आत्मा ने उसे उस तरीके से उपयोग करने और मार्गदर्शन करने का निर्णय लिया, जिसमें उसने सामग्री को आकार दिया और जो कुछ उसने हमें ईश्वर के शब्दों के रूप में प्रेषित किया। मुझे लगता है कि सैद्धांतिक रूप से यह संभव है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा होने के बहुत सारे सबूत हैं।

बेबीलोनियन मूल - पैन-बेबीलोनियन स्कूल दृष्टिकोण आइए बेबीलोनियन मूल के इस दावे पर चर्चा करें। 1875 में, लंदन में ब्रिटिश संग्रहालय के जॉर्ज एडम स्मिथ नाम के एक व्यक्ति ने ब्रिटिश अखबार डेली टेलीग्राफ को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने मेसोपोटामिया से आई लगभग बीस गोलियों की सामग्री का वर्णन किया, जिसमें सृजन की कहानी का वर्णन किया गया था। स्मिथ ने बाद में *द चैल्लियन अकाउंट ऑफ जेनेसिस* नामक एक पुस्तक लिखी , और इससे बाइबिल और पुरातत्व में भारी मात्रा में रुचि पैदा हुई क्योंकि यहीं से अनुसंधान और अध्ययन के उस पूरे क्षेत्र की शुरुआत हुई थी और लोगों की रुचि थी।

यहाँ सृष्टि का बेबीलोनियाई विवरण दिया गया है, यह उत्पत्ति में बाइबिल की सृजन कहानी से किस प्रकार भिन्न है? वह 1875 था। 1902 तक, फ्रेडरिक डेलिट्ज़ नाम के एक व्यक्ति का धर्मशास्त्र के प्रति बहुत ही निम्न दृष्टिकोण था। विडंबना यह है कि उनके पिता फ्रांज डेलिट्ज़ ने पुराने नियम पर एक प्रमुख टिप्पणी लिखी और पवित्रशास्त्र के बारे में बहुत उच्च दृष्टिकोण रखा। फ्रेडरिक ने 1902 में *बैबेल और बाइबल* शीर्षक से व्याख्यानों की एक श्रृंखला दी थी , जो आपकी ग्रंथ सूची पृष्ठ सात पर है। यह 1902 में जर्मन में प्रकाशित हुआ था और 1903 में अंग्रेजी में अनुवादित और प्रकाशित हुआ था, और यदि आप इसे देखना चाहें तो पुस्तकालय में इसकी प्रतियां हैं। वह पुराने नियम के दृष्टिकोण के पैन-बेबीलोनियन स्कूल के रूप में जाने जाने वाले नेता बन गए। पुराने नियम के दृष्टिकोण के

उस स्कूल का विचार यह था कि बाइबिल और बेबीलोनियाई विश्वदृष्टिकोण बहुत समान थे, और बाइबिल संबंधी दृष्टिकोण बेबीलोनियाई पर निर्भर था और बेबीलोनियाई दृष्टिकोण से लिया गया था।

डेलित्ज़स्च ने दावा किया कि उत्पत्ति की रचना कहानी और नूह की बाढ़ कहानी दोनों बेबीलोनियाई कहानियों से ली गई थीं। बेशक, उस तर्क का एक हिस्सा यह है कि बेबीलोन की कहानियाँ पहले की हैं। मूसा लगभग 1400 ईसा पूर्व के हैं, ये बेबीलोनियन कहानियाँ उस समय से लगभग चार या पाँच सौ साल पहले की हैं। तो उन्होंने कहा कि बाइबिल की रचना और बाढ़ का विवरण बेबीलोन की कहानियों का रूपांतरण है। अब, मैं आपको *बैबेल और बाइबिल* पुस्तक से नहीं, बल्कि एक अन्य पुस्तक से देता हूँ, जो यहां आपकी ग्रंथ सूची पृष्ठ सात पर भी सूचीबद्ध है, डेलित्ज़स्च के तहत दूसरी प्रविष्टि, पृष्ठ के तीन चौथाई हिस्से में, यह एक जर्मन शीर्षक है जो अंग्रेजी में इसका अर्थ है "ग्रेट डिसेप्शन", जो कि दो खंडों में काम था जिसे उन्होंने 1920 में प्रकाशित किया था। ग्रंथ सूची के पृष्ठ आठ के शीर्ष पर, आप ईजी क्रेलिंग द्वारा लिखित पुस्तक, *द ओल्ड टेस्टामेंट सिंस द रिफॉर्मेशन देखते हैं*। क्रेलिंग ने पुस्तक *द ग्रेट डिसेप्शन से उद्धरण* दिया है जिसे डेलित्ज़ ने पृष्ठ 158 पर लिखा है। इससे आपको पुराने नियम की फ्रेडरिक डेलित्ज़ की व्याख्या के बारे में कुछ जानकारी मिलेगी क्योंकि वह सबसे कट्टरपंथी आलोचकों में से एक है जिनसे आप कभी मिले होंगे।

यहाँ वह क्या कहता है, "पुराना नियम गलत और अविश्वसनीय, अविश्वसनीय आंकड़ों के सभी प्रकार के वास्तविक हॉज-पॉज के धोखे से भरा है, जिसमें झूठे चित्रण, भ्रामक पुनर्लेखन, संशोधन और स्थानान्तरण की वास्तविक भूलभुलैया की बाइबिल कालक्रम भी शामिल है। इसलिए कालभ्रम भी, विरोधाभासी विशिष्टताओं और पुरानी कहानियों, किंवदंतियों और लोककथाओं का निरंतर मिश्रण। संक्षेप में, जानबूझकर और अनजाने धोखे से भरी एक किताब, इसलिए किताब का शीर्षक, *द ग्रेट डिसेप्शन*, यह पुराने नियम के बारे में है। वह आगे कहते हैं, "ओल्ड टेस्टामेंट और इसकी सभी किताबें पुरातात्विक जानकारी की भाषाई सुंदरता से भरी हुई हैं, और इसके दोषों के बावजूद, एक

ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में इसके मूल्य को बरकरार रखा गया है, लेकिन यह सभी दिशाओं में अपेक्षाकृत देर से और अस्पष्ट स्रोत है। उत्पत्ति के पहले अध्याय से लेकर इतिहास के अंतिम अध्याय तक एक प्रचारात्मक दस्तावेज़। पुराने नियम के बारे में उनका दृष्टिकोण बहुत ऊँचा नहीं था और इसका एक बड़ा हिस्सा यह विचार है कि बहुत सारी सामग्रियाँ बेबीलोनियाई स्रोतों से ली गई हैं। इसमें से अधिकांश वेल्हाउज़ेन दृष्टिकोण का पालन कर रहे हैं, देर से सामग्री जिसे पहले के रूप में दर्शाया गया है, ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय नहीं है, आदि।

### एनुमा एलिश

मुझे नहीं पता कि पिता से क्या रिश्ता है। उनके पिता फ्रांज़, जो एक वफादार और अच्छे बाइबिल विद्वान थे, से ऐसे कट्टरपंथी विचारों वाले बेटे तक पहुंचना एक आश्चर्यजनक बात है; यह दिलचस्प होगा कि क्या हुआ। आइए बेबीलोनियाई मूल के इस विचार पर आगे बढ़ें। सृष्टि की बेबीलोनियाई कहानी एनुमा एलिश द्वारा जानी जाती है। उन दो शब्दों, एनुमा और एलीश का अर्थ है "जब ऊंचाई पर हो।" अधिकांश विद्वान रचना का समय लगभग 1700-2000 ईसा पूर्व बताते हैं, भले ही सबसे पुराना मौजूदा पाठ लगभग 1000 ईसा पूर्व का है, इसलिए हमारे पास ऐसा कोई पाठ नहीं है जो 1700 ईसा पूर्व का हो। इस बात पर काफी सामान्य सहमति है कि मूल रचना उसी समय की है। पूरे दस्तावेज़ में पाए जाने वाले विभिन्न ऐतिहासिक संकेतों के कारण, जो इतिहास की इस अवधि के दौरान अपने संदर्भ और सेटिंग पाते हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसकी उत्पत्ति 1700-2000 ईसा पूर्व होने के बारे में कोई सवाल है, भले ही सबसे पुराना पाठ लगभग 1000 ईसा पूर्व का है।

फिर उसकी तुलना बाइबिल सामग्री से करें। हम पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों की सामग्री के लिए मूसा को ज़िम्मेदार मानते हैं। मूसा सबसे पहले 1400 के दशक में रहते थे, हम निर्गमन की तारीख और निश्चित रूप से मूसा से संबंधित तारीख पर बाद में चर्चा करेंगे। निर्गमन की प्रारंभिक तिथि 1400 के मध्य में है और अंतिम तिथि 1290 के आसपास है, इसलिए आप मूसा को लगभग 1400 और 1200 के बीच रखते हैं। किसी भी

मामले में, 2000-1700 के बाद, इसलिए मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई सवाल है कि एनुमा एलिश उत्पत्ति अध्याय 1 से भी पुराना है, जहां तक इसकी रचना का सवाल है।

एलेक्जेंडर हीडेल नामक व्यक्ति द्वारा लिखित एनुमा एलिश का बहुत गहन अध्ययन किया गया है, यह आपकी ग्रंथ सूची में है, पृष्ठ सात पर अंतिम प्रविष्टि है। पुस्तक का शीर्षक *द बेबीलोनियन जेनेसिस है*। हीडेल एनुमा एलिश का बहुत सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है और वह कई चीजें बताता है जो एनुमा एलिश की जेनेसिस निर्माण खाते से तुलना करने में सहायक होती हैं। एक बात जो उन्होंने नोट की वह एनुमा एलिश का उद्देश्य है, और वह कहानी के उद्देश्य के संबंध में दो बातें बताते हैं। वह कहते हैं, सबसे पहले, यह मूलतः सृजन की कहानी नहीं है। ऐसी सात गोलियाँ हैं जिन पर एनुमा एलिश लिखा हुआ है और इसका केवल एक बहुत छोटा हिस्सा ही सृजन से संबंधित है, इसलिए यह मुख्य रूप से सृजन की कहानी नहीं है। आपके पास एनुमा एलिश, मर्दुक के मुख्य पात्रों का लंबा विवरण है जो बाबेल शहर के मुख्य देवता हैं। आपके पास उनके जन्म, उनके विकास का लंबा विवरण है और दस्तावेज़ वास्तव में सृजन की कहानी के बजाय बाबुल के देवता के रूप में मर्दुक का समर्थन करने वाला एक क्षमाप्रार्थी प्रतीत होता है। खैर हमें अगली बार वहां से उठाना होगा।

पॉल श्राइडर द्वारा लिखित  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित  
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन,  
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया